19. अनोखी परीक्षा

• विजयदान देथा

लेखक परिचय

श्री विजयदान देथा हिंदी कथा साहित्य में राजस्थान के आलोक स्तम्भ हैं। बोरून्दा, जोधपुर में जन्मे श्री देथा ने अपनी एकान्त अखण्ड साहित्य साधना से हिंदी कथा साहित्य के भंडार की निरन्तर वृद्धि की। आपके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हैं और पत्र–पत्रिकाओं में प्रायः कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं। 'बिज्जी की कहानी' आपकी कहानियों का पर्याय नाम हो गया है। पुरातन परिवेश को नया संदर्भ प्रदान कर रोचक कथा लेखन आपकी विशेषता है। आपकी प्रसिद्ध कहानी 'दुविधा' पर हिंदी फिल्म 'पहेली' नाम से भी बन चुकी है। आपकी कहानियाँ राजस्थान की धरती की सौंधी–सौंधी सुगंध लिए हुए है। सरल, सरस, प्रवाह–पूर्ण, लोकोक्तियों, मुहावरों से समृद्ध भाषा–शैली आपका वैशिष्ट्य है।

पाठ परिचय

आत्मतत्व या परमात्मा सब तरफ व्याप्त है, वह सब कुछ देखता सुनता है, भारतीय दर्शन के इस शाश्वत सिद्धांत को सरल कहानी के माध्यम से अत्यंत सरल भाषा–शैली में किन्तु अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अनेकानेक शास्त्रों का पठन–पाठन, अद्वितीय विद्वत्ता या अन्य और कोई गुण व्यक्ति के गुण–कर्म स्वभाव की वास्तविक कसौटी नहीं है। कसौटी है उसका अन्तर्मन जो स्वार्थ आड़े आने पर या संकट पड़ने पर ही प्रकट होता है। छोटे भाई की एकान्त ढूँढने में असफलता उसके शाश्वत सत्य से साक्षात्कार की सफलता को अत्यन्त सुन्दर–सरल ढंग से अभिव्यक्त करती है।

मूल पाठ

एक था औघड़ महात्मा। मन–मौजी और नीम–पागल। इच्छा होती तो उगते सूरज के सामने आँखें मूँद कर सात बार जल चढ़ाता और कभी–कभार उसकी किरणों पर सात धोबे धूल उछाल देता। कभी माला जपने बैठता तो सात दिन और सात रातों तक उठता ही नहीं। और कभी माला के मनके तोड़कर घूरे के हवाले कर देता। कभी कहता कि मनुष्य योनि के बावजूद वह गधे की जिन्दगी जी रहा है। और कभी डींग हाँकता कि उससे बड़ा सन्त न तो जन्मा है और न कोई जन्मेगा। कई बार मौन व्रत धारण कर लेता तो होंठ ही नहीं खोलता और कभी माँ–बहिन की भद्दी गालियाँ निकालता तो रुकने का नाम ही नहीं। फिर भी उसके प्रति भक्ति–भाव में कोई खामी नहीं पड़ी। चरणों में सिर नवाकर दंडवत करने की परस्पर होड़–सी मच जाती। मन करता तो किसी को भी गले लगा लेता वरना मुँह थूक से भर देता। ठोकरें मार बैठता।

शिष्य बनने के निमित्त लोग–बाग उसकी खूब–सेवा बन्दगी करते पाँव पकड़ते। किन्तु एक बार मना करने पर ठेठ तक अड़ा रहता। कभी किसी भाग्यशाली पर मेहर हो जाती तो उसे महीनों तक मार पिदाता। उसके वश चलते वह किसी को भी आसानी से चेला नहीं बनाना चाहता था। आँखें तरेर कर कहता, स्वयं भगवान भी शिष्य बनने की खातिर हाथ जोड़े तब भी नहीं मानूँ। गुरु बनना सरल है, पर शिष्य बनाना कठिन तपस्या है। तो कभी–कभार उस बावरे संत के जँचने

पर किसी भी अजाने राहगीर को हाथ से इशारा करके पास बुलाता और उसे जबरदस्ती शिष्य बना लेता।

एक बार एक छोटी सी ढाणी के नवयुवक उसके पास आए। औघड़ महात्मा उन्हें दुत्कारते कहने लगा, किसी बड़े शहर से भी मैं एक साथ दो शिष्य नहीं बनाता, फिर एक फोड़े जितनी छोटी ढाणी से दो चेले क्यों कर बनाऊँ ? कोई एक बन्दा अपनी मरजी से सब्र कर ले तो दूसरे को अभी इसी वक्त चेला बना लूँगा। पर उस औंधी खोपड़ी के महात्मा ने जैसा कहा, वैसा किया नहीं। सब्र करने वाले को अदेर चेला मूँड लिया और उत्सुक व्यक्ति को डपट कर खदेड़ दिया।

एक मर्तबा उससे भी कहीं बेशी पागल व्यक्ति ने चेला न बनने का दृढ़ संकल्प किया तो उसे अपना गुरु बना लिया। दो सगे भाइयों ने एक बार उस विचित्र सन्त के पाँव पकड़कर जीवन पर्यंत न छोड़ने की भीष्म प्रतिज्ञा की तो उसे झख मार कर झुकना पड़ा। शुरुआत में तो उसने हमेशा वाली सूखी घुड़की से ही काम पटाना चाहा कि दो सगे भाइयों को एक साथ सपने में भी चेला नहीं बनाएगा। लेकिन वे चेले तो उससे भी अधिक हठी थे। कहा, ''अब तो शिष्य बने बिना सात जन्म तक पाँव नहीं छोड़ेंगे।''

गुरु के पास उस वक्त न तो पत्थर थे और न कोई बाँकी टेढ़ी लकड़ी। सो मुक्कों से ही धमाधम पीटते–पीटते उसके ही हाथ दुख चले पर भाइयों ने चूँ तक नहीं की। दोनों तरफ मामला पूरा खिंच गया। आखिर औघड़ सन्त को ही हार स्वीकार करनी पड़ी। मुस्कुराते हुए धीमे से बोला, ''मुझे क्यों खामखाह परेशान कर रहे हो ? अधिक शिष्य बनाने पर बड़े से बड़े पंथ का भी पतन होने में देर नहीं लगती। यदि तुम ऐसी ही जिद पर अड़े हुए हो तो मैं पहिले तुम्हारी परीक्षा लूँगा। जो भाई परीक्षा में सफल होगा उसे ही चेला बनाऊँगा। मेरी छवि खंडित होने की बजाए मैं मृत्यु का वरण करना बेहतर समझता हूँ।''

औघड़ महात्मा के श्रीमुख से पहली बार मुनासिब बात सुनते ही दोनों भाइयों ने तत्काल पाँव छोड़ दिए। हाथ जोड़कर अरदास की, 'आपकी जो भी आज्ञा होगी, उसकी अनुपालना में ही हमारे जीवन की सार्थकता है। शिष्य बनाने की चाह रखने वाले गुरुओं की छाया से भी हम दूर रहना चाहते हैं।'

तब महात्मा ने सहज भाव से आदेश दिया कि वे अपने गाँव जाकर दो बड़े–बड़े बकरे लाएँ, साथ ही तीखी धार वाली दो तलवारें। ऐसी एकान्त गुप्त ठौर जाकर उनका सिर काटें कि न कोई देखने वाला हो और न कोई सुनने वाला। यदि किसे भी भनक पड़ गई तो हरगिज शिष्य नहीं बनाएँगे। चाहे वह सिर पटक–पटक कर अपने प्राण ही क्यों न दे दें।

बस! यह काम तो एकदम आसान है। दोनों भाई पूर्णतया खुश व संतुष्ट होकर अपने गाँव गए। महात्मा के आदेश मुताबिक एक कसाई के पास दो जुड़वाँ बकरे मिल गए सामान्य आदमी की कमर तक ऊँचे। सफेद बुर्राक रंग। बाएँ एकदम नरम। बल खाते सींग पुष्ट गरदन। पुरखों के हाथों वक्त बेवक्त आजमाई तलवारें। धारदार और चमचमाती। महात्मा के चरणों में धोक देने के लिए झुके तो वह बिफर गया। गुस्से में हकलाते हुए कहने लगा, 'इस जघन्य अपराध की खातिर मेरी अनुमति चाहते हो ? नहीं मिलेगी, सौ बार माथा रगड़ने पर भी नहीं मिलेगी। इनकी

बलि चढ़ाओ न चढ़ाओ तुम्हारी मरजी। शिष्य तुम्हें बनना है, मुझे नहीं। मैंने तो किसी को भी अपना गुरु नहीं बनाया। समुची कुदरत ही मेरी गुरु है। कोई ज्ञान ग्रहण करने वाला चाहिए। भला कोई मनुष्य किसी मनुष्य का गुरु क्यों कर बन सकता है ? खैर छोड़ो इसी झीने और दुश्वार मर्म को। पर पुख्ता ख्याल रहे कि ज्ञात–अज्ञात रूप से भी किसी पंछी या चींटी तक को इस गुप्त बलि का आभास न हो। अब काला मुँह करो यहाँ से। यों टुकुर–टुकुर मेरा मुँह क्यों ताक रहे। शायद बकरों से पहले मेरा सिर कलम करने की सोच रहे हो ? कर डालो, मेरी मनाही नहीं है। गुरु बनाने का झंझट तो मिटे। मेरे प्रति लोगों की गलतफहमी का निवारण तो हो।'

तत्पश्चात् दोनों भाई अलग–अलग रवाना हुए। संयोग की महेर–मया कि बड़े भाई का काम तो थोड़ी दूर जाने पर ही सलट गया। पहाड़ के पाँवों तले ही एक ऐसी एकांत गुफा मिल गई कि दूसरी बार वह तलाश करना चाहे तो खोज नहीं सके। सतर्क होकर चारों तरफ देखा आदमजाद की बात तो दरकिनार, दूर–दूर तक कोई पंछी या किसी जानवर के निशान तक नजर नहीं आए। गुरु के निर्देश मुजब ही ठौर मिल गई, मानो इसी की खातिर उनका आशय हो। झटपट बकरे को अंदर धकेल कर स्वयं भीतर घुस गया। लगता है कि महात्मा जी की मंशा शायद उसे ही चेला बनाने की हो। तिस पर उसका अहोभाग्य कि बकरे का मुण्ड व रक्त–रंजित तलवार लिए जब वह महात्मा के आसन आया तो उस औघड़ महात्मा ने पीठ थपथपा कर उसे अपने पास बिठाया। बड़े भाई के दिल में चेला बनने की आकांक्षा फड़फड़ाने लगी।

किन्तु छोटा भाई तो निपट बौड़म ही निकला। जिस किसी निर्जन स्थान पर बकरे का मुंड काटने के लिए तैयार होता तो तलवार वाला हाथ काँपने लगता–अरे! यहाँ तो सूरज अपनी प्रखर किरणों से देख रहा है। भला उसकी किरणों से कौन–सी चीज अनदेखी रह सकती है ? कभी उसे आशंका होती कि हवा आँखें फाड़–फाड़ कर तलवार और बकरे को देख रही है। उसका श्वास और रक्त प्रवाह तक सुन रही है, ये पेड़ देख–सुन रहे हैं। जिन पेड़ों की जड़ें धरती के सघन अँधियारे में अपने अदीठ प्राणों को अविलम्ब खोज लेती है, उनके अनगिनत पत्तों से भला क्या चीज छिपी रह सकती है ? उड़ते पाखी पुख्ता तौर पर उसी की टोह ले रहे हैं। कीट–मकोड़े देख रहे हैं, सुन रहे हैं। बालू रेत का चमकता कण–कण देख रहा है। स्वयं बकरा तो देख ही रहा है। तलवार देख रही है। और वह स्वयं भी तो अंधा नहीं है। बकरे के सुकोमल बालों को देख रहा है। बकरे की औझरी में दुबका अंधेरा उसे देख रहा है।

छोटा भाई तो अजीब ही ऊहापोह में फँस गया। चारों तरफ भटकता हुआ तीन दिन और तीन रात इधर–उधर चक्कर लगाता रहा। किन्तु उसे कहीं भी ऐसी गुप्त ठौर नहीं मिली, जहाँ न कोई देख रहा हो और न कोई सुन रहा हो। रात का अंधियारा भी आँखें टमकारते देखे बिना नहीं रहता। तिस पर उसके दो ही नहीं, असंख्य आँखें हैं। चंचल जुगनूँ भी बगैर देख नहीं माने। ज्योंहि बकरे की मुंडी काटने को उद्यत होता तो राम जाने पत्थर पर भी आँख उग आती। बकरे और तलवार को देखने के लिए दमकने लगती। और तो और तालाब के किनारे एक के बाद एक लहरें भी उस कृत्य को देखने–सुनने के लिए मचल उठतीं। महात्मा का चेला न भी बना तो कोई बात नहीं उससे यह काम सपने में भी नहीं हो सकता। सपने की आँखें तो पहाड़ और समुद्र के आर–पार देख लेती है। ब्रह्मांड के परे भी उनसे कुछ गोपनीय नहीं रहता। महात्मा इजाजत दें

तो वह स्वयं मरने को तत्पर हो जाएगा, मगर किसी अन्य जीव को मार नहीं सकता। भले ही वह मौत का प्रतिरूप साँप या शेर ही क्यों न हो।

आखिर बुरी तरह परेशान व भीतर से क्षत–विक्षत होकर वह महात्मा के आसन पहुँचा। पूर्णतया श्लथ और विवर्ण। मानो महीनों की बीमारी या अनशन से उठा हो। तलवार और बकरा – दोनों की जिम्मेवारी से मुक्त होकर रिरियाते कहने लगा, ''माफ करिये, मुझे इस शर्त चेला बनने की कतई इच्छा नहीं है। इतनी बड़ी जीवंत दुनिया में कोई भी ऐसी गुप्त ठौर नहीं है, जहाँ मुझे या तलवार को या बकरे को कोई न कोई न देखता हो और न सुनता हो। धरती से ऊपर वायुमण्डल में भी मुझे ऐसी जगह कहीं नजर नहीं आती जो मेरे कृत्य को न देखे और न सुने।''

महात्मा ने बार–बार पूछ–ताछ की तब उसने अपने द्वंद्व की पूरी कथा सुनाकर अंत में कहा, ''मान लीजिए, दूसरा कोई भी मुझे न देख रहा हो, पर मैं स्वयं तो अपने आपको और अपने मन को देख ही पा रहा था। यही बकरा भी तो क्षुब्ध आँखों से सब कुछ देख रहा था। आप विश्वास करें, न करें, उस दौरान इस तलवार की आँखें झपझपाने लगी थीं। यदि मुझे किसी का चेला बनना है तो अपनी शर्तों पर बनूँगा। किसी दूसरे की हिदायत से नहीं। और इस तरह चेला मूँडने वाले गुरु की भी क्या अहमियत है।''

तब उस औघड़ ने छोटे भाई के चरण स्पर्श करते कहा, तुझे किसी का भी शिष्य बनने की जरूरत नहीं है। और आज मेरी अन्तिम साध भी पूरी हुई। जिस गुरु की तलाश थी, वह मुझे अजाने ही मिल गया। और उधर तेरे बड़े भाई के उनमान बकरे की मुंडी काटने वाले हजार चेले भी मिल जाएँ तो किस काम के। उलटे पन्थ और गुरु की गरिमा ही घटाएँगे।

शब्दार्थ

धोबे–अंललि / ठेठ–अंतिम सीमा तक / मर्तबा–बार / मुनासिब–उचित / ठौर–स्थान / अदेर–बिना विलम्ब के / अदीठ–अदृश्य, जो दिखाई न दे / पाखी–पक्षी / औझरी –आमाशय / श्लथ–थका हुआ / विवर्ण–जिसका रंग उड़ गया हो / साध–कामना / दंडवत–लेट कर प्रणाम / भाग्यशाली–किस्मत वाला / मेहर–अनुकंपा / बौड़म –अनाड़ी / हिदायत–निर्देश / झीने–बारीक, पतले / दुश्वार–कठिन / मर्म–रहस्य / अहमियत–महत्व / क्षुब्ध–निराश / क्षत – विक्षत–घायल /

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महात्मा अपना गुरु किसे मानते थे ?

   (क) कुदरत को (ख) शिष्य को

   (ग) ईश्वर को (घ) भाइयों को ( )

2. छोटे भाई का चरित्र किस प्रकार का था ?

   (क) हिंसक (ख) दयालु

   (ग) भक्त (घ) मूर्ख ( )

   उत्तरमाला– (1) क (2) ख

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बड़ा भाई बकरे को लेकर कहाँ गया ?
2. महात्मा जब मौन धारण कर लेता तो क्या करता था ?
3. महात्मा ने अनुमति क्यों नहीं दी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. महात्मा क्या डींग हाँकता था ?
2. महात्मा ने भाइयों की परीक्षा कैसे ली ?
3. छोटा भाई बौड़म क्यों निकला ?
4. छोटा भाई बकरे की बलि क्यों नहीं दे सका ?

निबंधात्मक

1. महात्मा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. छोटे भाई ने महात्मा का शिष्य बनने से क्यों मना कर दिया ?
3. महात्मा ने अपना गुरु किसे बनाया और क्यों ? लिखिए
4. छोटा भाई अजीब उहापोह में क्यों फँस गया ?

•••

यह भी जानें

श्रुतिमूलक 'य', 'व'

(क) जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है वहाँ इनका प्रयोग न किया जाए, अर्थात् किए : किये, नई : नयी, हुआ : हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए। जैसे – दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली

(ख) जहाँ 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे – स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि (अर्थात् यहाँ स्थाई, अव्यईभाव, दाइत्व नहीं लिखा जाएगा)

•••